पाठ - 31

सुब्रह्मण्यम् भारती

एट्टपुरम् के दरबार में साहित्य चर्चा चल रही थी। सात वर्षीय एक बालक अपने पिता के पास बैठा बड़े ध्यान से लोगों की बातें सुन रहा था। चर्चा समाप्त हुई। बालक अपने स्थान से उठा। राजा की आज्ञा पाकर बालक ने स्वरचित कविता का पाठ किया। कविता सुनकर राजा अचम्भे में पड़ गए, दरबारियों को भी कम आश्चर्य नहीं हुआ। आश्चर्य का कारण था बालक की छोटी उम्र और कविता में व्यक्त भावों की गूढ़ता। गुणग्राही राजा को बालक में कवि के गुण परिलक्षित हुए। राजा ने बालक को महाकवि होने का आशीर्वाद दिया। सात वर्ष की अवस्था में प्राप्त आशीर्वाद को जीवन में चरितार्थ करने वाला यही बालक आगे चल कर तमिलनाडु का महान कवि बना। उसका नाम था सुब्रह्मण्यम्।

सुब्रह्मण्यम् का जन्म तमिलनाडु प्रदेश में सन् 1882 में हुआ था। गाँव का नाम था शिवयेरी। पिता चिन्नस्वामी तमिलभाषा के प्रकाण्ड पंडित थे। गणित में भी उनकी गहरी पैठ थी। चिन्नस्वामी का एट्टपुरम के दरबार में बड़ा सम्मान था। पिता के साथ सुब्रह्मण्यम् भी यदा-कदा दरबार जाया करते थे।

सुब्रह्मण्यम् बचपन से ही कविता लिखने लगे थे। उनकी काव्य प्रतिभा से प्रभावित हो विद्वानों ने ग्यारह वर्ष की अल्पायु में ही सुब्रह्मण्यम् को 'भारती' की पदवी से विभूषित

किया। विद्वतमण्डली का यह सम्मान सुब्रह्मण्यम् के अतिरिक्त अभी तक भारतेन्दु हरिश्चन्द्र को ही प्राप्त हुआ है।

बचपन में ही ‘भारती’ माँ के स्नेह से वंचित हो गए। जब वे पाँच वर्ष के थे तभी उनके सिर से माँ का साया हट गया। पिता ने दूसरा विवाह कर लिया। दूसरी माँ ने ‘भारती’ को पूरा प्यार दिया। बहन भागीरथी को भी नई माँ से कभी कोई शिकायत नहीं रही।

विवाह के दो वर्ष बाद अचानक पिता का स्वर्गवास हो गया। चैदह वर्षीय बालक के सुकुमार कन्धों पर परिवार का भारी बोझ आ पड़ा। पिता के न रहने पर राजपरिवार से भी सम्बन्ध टूट गया। आय के समस्त स्रोत समाप्त हो गए। ‘भारती’ को परिवार चलाना दुरूह हो गया। उन्होंने जीवन में पहली बार निर्धनता की मार्मिक पीड़ा की अनुभूति की। ‘धन की महिमा’ कविता में उनकी यह पीड़ा व्यक्त हुई है।

पिता की मृत्यु के एक वर्ष बाद ‘भारती’ वाराणसी चले गए। वहाँ अपने फूफा के पास रहकर उन्होंने हिंदी, संस्कृत का अध्ययन किया। हिंदी, संस्कृत लेकर भारती ने प्रथमा की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। उन्होंने अंग्रेजी की शिक्षा पिता के समय में ही तिरुवेलवेली के अंग्रेजी स्कूल में प्राप्त की थी।

’भारती’ का भाषाओं के प्रति बड़ा उदार दृष्टिकोण था। वे अपनी मातृभाषा को बहुत प्यार करते थे। साथ ही हिंदी तथा देश की अन्य भाषाओं के प्रति भी उनमें अगाध प्रेम था। तमिलभाषी होते हुये भी उन्होंने अनुभव किया कि हिंदी ही एकमात्र ऐसी भाषा है जो भारतीय संस्कृति की उत्कृष्ट धरोहर को सँभालने में समर्थ है। वही भाषा देश की एकता को अक्षुण्ण रखने में सक्षम है। इसी भावना से प्रेरित होकर उन्होंने हिंदी साहित्य का अध्ययन किया।

वाराणसी में रहकर ’भारती’ ने काशी क्षेत्र का तथा वहाँ की संस्कृति का गहन अध्ययन किया। विद्वता की गरिमा से मण्डित वाराणसी का वातावरण उन्हें बहुत भाया। गंगा के घाटों के रमणीक दृश्य ने उनके मन को मोह लिया।

एक वर्ष तक वाराणसी मंे रहने के बाद ’भारती’ अपने गाँव लौट गए। घर पर ही उन्होंने साहित्य-साधना प्रारम्भ की। ’भारती’ की साहित्य-साधना की सुगन्ध एट्टपुरम् के दरबार तक पहुँची। राजा ने ’भारती’ को दरबार में बुला लिया। दरबार में रहते हुये उन्होंने तमिल साहित्य का अध्ययन किया। वहीं अंग्रेजी साहित्य को भी पढ़ने का उन्हें अवसर मिला। वे शैली (अंग्रेज लेखक) की स्वच्छन्दतावादी कविताओं से बहुत प्रभावित थे।

'भारती' ने शैली के नाम पर अपना उपनाम भी 'शैल्लिदासन' रख लिया था। इसी नाम से उन्होंने अंग्रेजी कविताओं का तमिल में अनुवाद प्रकाशित किया।

'भारती' प्राचीन साहित्य के बड़े पारखी थे। उनको विभिन्न भाषाओं के प्राचीन साहित्य को संकलित करने का शौक था।

एक बार एट्टपुरम के राजा के साथ वे चेन्नई (पूर्व नाम मद्रास) गए। जाते समय पत्नी ने उनसे वहाँ से अच्छी साड़ियाँ लाने का अनुरोध किया। 'भारती' ने साड़ी के पैसों से तमिल साहित्य खरीद लिया। साहित्य को दो गाड़ियों में भरकर घर लौटे। लदी हुई गाड़ियों को दरवाजे पर खड़ी देख चेल्लम्मा बहुत प्रसन्न हुईं। परंतु जब उन्हें वस्तुस्थिति का ज्ञान हुआ तो वह ठगी सी रह गईं। 'भारती' पत्नी की वेदना को भाँप गए। उन्होंने मुस्कराते हुए कहा-'"मुझे खेद है कि मैं तुम्हारे लिए साड़ियाँ नहीं ला सका। वस्तुतः ये साहित्यिक कृतियाँ साड़ी से कहीं अधिक वास्तविक और स्थायी सम्पत्ति हैं।"

'भारती' में मानवतावादी दृष्टिकोण बहुत प्रबल था। वे सच्चे अर्थों में मानव थे। मानव को वे ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ कृति मानते थे। वे कहते थे ईश्वर की इस सुंदर कृति को जाति और सम्प्रदाय के दोष से कलंकित न किया जाय। छोटी-छोटी बातों पर लोगों को आपस में झगड़ते देख उनका मन दुःखी हो उठता था। वे उन्हें समझाते थे एवं उनको बताते थे कि जाति एवं सम्प्रदाय मनुष्य द्वारा बनाये गए बन्धन हैं। उनको ईश्वरीय समझना मनुष्य की सबसे बड़ी भूल है। उनका विश्वास था कि समाज की उन्नति के लिए आपसी मेल-जोल आवश्यक है।

'भारती' की रचनाओं में राष्ट्रीयता का स्वर मुखरित हुआ है। देश के स्वतंत्रता संग्राम के लिए उन्होंने जिस शस्त्र का प्रयोग किया, वह था उनका लेखन, विशेषतया कविता लेखन। उनकी कविताओं द्वारा तमिलनाडु में राष्ट्रीयता की असीम लहर छा गई। उनकी कविताओं ने तमिलवासियों को जाग्रत कर स्वतंत्रता आन्दोलन में भाग लेने के लिए प्रेरित किया।

वे लोगों को अंग्रेजों के बहकावे में न आने की चेतावनी बार-बार देते रहे। स्वतंत्रता प्राप्ति के कई वर्ष पूर्व ही 'भारती' ने अंग्रेजों को जता दिया था कि भारत में उनके शासन की समाप्ति सन्निकट है क्योंकि भारतीय उनकी भेद-भाव वाली नीति से परिचित हो चुके हैं। अब वे संगठित हैं-

माँ के एक गर्भ से जन्मे रे विदेशियों, भेद न हमारे।

मनमुटाव से क्या होता है, हम भाई-भाई ही रहेंगे।

साथ रहेंगे तीस कोटि हम, साथ जियेंगे, साथ मरेंगे।।

‘भारती’ शान्ति एवं अहिंसा के पुजारी थे। अहिंसा द्वारा स्वराज प्राप्त करना उनका अभीष्ट था।

उनकी देश-प्रेम सम्बन्धी कविताएँ ‘इण्डिया’ नामक तमिल पत्रिका में प्रकाशित होती थीं।

‘भारती’ स्वभाव से दानी थे। दूसरों की सहायता करने में उन्हें आनन्द आता था। उनकी दानशीलता की अनेक कथाएँ आज भी तमिलनाडु में प्रचलित हैं। ‘भारती’ को बच्चे बहुत प्यारे थे। बालमंडली में वे घंटों बैठे उनसे बातें करते रहते थे। बच्चों के मनोरंजन में वे सहयोगी बनते। कभी-कभी स्वयं बच्चों जैसा आचरण भी करने लगते।

‘भारती’ तिरुनेलवेली मंदिर के पालतू हाथी को नित्य गन्ना और नारियल खिलाने जाया करते थे। संयोगवश एक दिन वह हाथी पागल हो गया। लोगों के लाख मना करने पर भी ‘भारती’ नित्य की भँाति पागल हाथी को नारियल खिलाने पहुँचे। पास जाते ही हाथी ने उन्हें इतनी जोर से धक्का मारा कि वे छिटककर दूर जा गिरे, गिरते ही वे बेहोश हो गए। मूचर्िछत अवस्था में उन्हें चिकित्सालय में भर्ती कराया गया। अस्पताल से आने के बाद भी वे अस्वस्थ रहे। 12 दिसम्बर सन् 1922 को भारतमाता का यह अनन्य भक्त चिरनिद्रा में सो गया।

तमिलनाडु के कवियों में सुब्रह्मण्यम् भारती मूर्धन्य हैं। ‘भारती’ की रचनाओं में राष्ट्रीयता का स्वर मुखरित हुआ है। ‘भारती’ ने देश की एकता एवं अखण्डता की रक्षा की बात उस समय कही थी जब देशवासी परतंत्रता की जंजीरों में जकड़े थे। ‘भारती’ ऐसी स्वतंत्रता के पोषक थे जिसकी नींव एकता और समानता पर टिकी हो। बाल साहित्य सृजन में भी उनका योगदान प्रशंसनीय रहा है। ‘भारती’ की समस्त कृतियों को तमिलनाडु सरकार ने ‘भारती ग्रंथावली’ के अंतर्गत तीन खण्डों में प्रकाशित किया है।

मानवता के प्रबल समर्थक, राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता के अनन्य उपासक ‘भारती’ धन्य हैं।

अभ्यास

1. सुब्रह्मण्यम् भारती ने देश के विकास के लिए किन बातों को आवश्यक माना है ?

2. सुब्रह्मण्यम् भारती किस प्रकार राष्ट्रीय एकता स्थापित करना चाहते थे ?

3. नीचे लिखे वाक्यों के सम्मुख अंकित शब्दों में से सही शब्द छाँटकर वाक्य पूरा कीजिए-

क. सुब्रह्मण्यम् को 'भारती' की उपाधि से .... में विभूषित किया गया। (वृद्धावस्था, बचपन, युवावस्था, मरणोपरान्त)

ख. 'भारती' ने हिंदी, संस्कृत की शिक्षा .... प्राप्त की थी। (मद्रास (चेन्नई) में, तिरुनेलवेली में, वाराणसी में)

ग. 'भारती' की बहन का नाम .... था। (भागीरथी, सावित्री,चेल्लम्मा)

4. 'भारती' को किस बात का विशेष शौक था ?

5. 'भारती' के जीवन की किन्हीं 5 विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।